शानू सलोनी
हिन्दी विभाग
वीमेंस कॉलेज
समस्तीपुर

(B.A. Hons. ...)
प्रथम पत्र

आधुनिक हिन्दी कविता की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा

द्विवेदी युग के काल खंड (1903-1918) में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा का विकास प्रवाहित होता दिखाई देता है। राम स्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार इस काल में दो धाराएँ चल रही थी एक अनुशासन की धारा थी जिसके अंतर्गत मैथिली शरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, अयोध्या प्र. सिंह 'हरिऔध' तथा प्र. शुक्ल आदि आते हैं तो दूसरी धारा स्वच्छंदतावाद की है जिसके प्रमुख कवि श्रीधर पाठक, मुकुटधर पांडे, लोचन प्र. पांडे, रामनरेश त्रिपाठी आदि हैं। इस युग की प्रमुख प्रवृति 'नवजागरण' है।

अतीत के आइने में वर्तमान को देखना ही नवजागरण है। नवजागरण अपनी ही परंपराओं का पुर्नमूल्यांकन है। यह अतीत की ओर दृष्टि डालता है वर्तमान की समस्याओं का सफल और सार्थक निदान ढूंढने के लिए। अतीत वर्तमान या भविष्य से कटा हुआ नहीं होता। परंपरा अतीत से होती हुई वर्तमान से भविष्य की ओर जाती है। अपने वर्तमान को समझने के लिए बहुत आवश्यक है कि हम अपने अतीत को जानें। मजबूत जड़ों की पहचान ही हमें उन्नत भविष्य की ओर उन्मुख करता है। मैथिली शरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में पूरे देश को संबोधित करते हुए कहा —

"हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।"

'भारत-भारती' नवजागरण का प्रतिनिधि काव्य है। हीन भावना से ग्रसित भारतीयों के

(2)

समग्र समृद्ध अतीत को सामने रखकर भारतीयों में व्याप्त हीनता को उन्होंने दूर करने का प्रयत्न किया है

'हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में कोई और है ?"

द्विवेदी युग में महान पुरुषों का स्मरण कर के कवियों ने जनता का खोया हुआ विश्वास फिर से दिलाना चाहा। द्विवेदीयुगीन नवजागरण में भी राज भक्ति (अंगरेजों के प्रति प्रेम) नहीं दिखती। इस युग की राष्ट्रीयता आक्रामक भी है एवं आलोचनात्मक भी। तिलक और गोखले की राजनीतिक सक्रियता ने गुलाम भारत की मानसिकता को बहुत बदला था। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" उन दिनों मुक्ति का मंत्र बन गया था। इसे हक और अधिकार से जोड़कर उन्होंने भारतीय जनता को साहसी बना दिया था। द्विवेदी युग में कवियों ने सीधे-सीधे स्वतंत्रता की माँग की। नाथू राम शर्मा 'शंकर' कहते हैं

'देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।"

देश के अतीत के प्रति प्रेम भावनात्मक राष्ट्रीयता है और नवजागरण इसी का प्रेरक है। किसी भी देश की राष्ट्रीय चेतना वहाँ के विभिन्न समुदायों के बीच की एकता से ही विकसित होती है। पाठक जी कहते हैं —

" वंदनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों,
बांधवता में बंधे परस्पर परता के अज्ञानी हों।"

यही राष्ट्रीयता की परिभाषा है। परस्पर भाईचारे में बंधे होकर ही राष्ट्रवासियों का एक राष्ट्र का सपना साकार हो सकता है। राम नरेश त्रिपाठी ने राष्ट्रीयता की एक समग्र सोच विकसित की। 'मिलन', 'पथिक' और 'स्वप्न' उनके तीनों खण्डकाव्य से एक सम्यक्चित राष्ट्रीय दृष्टि उभरती है। उन्होंने पराधीनता को पशुत्व के तुल्य बताया।

"पराधीन रहकर सुख-शोक न सह सकता है?
यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।"

नव जागरण एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास के कारण ही समाज सुधार भी इस समाज के अभाज एवं साहित्य में दीख पड़ता है। अभी भी समाज में नारियों की स्थिति उत्तम थी। साहित्य समाज का दर्पण है। इस चेतन समाज में भी विधवाओं की स्थिति को भी उभार सकारा निरूपण समकालीन साहित्य में किया गया है। 'गारिडा रहस्य' में ऐसी विधवा की करुण कथा है जो माँ के पेट में ही विधवा हो जाती है। सामाजिक और आर्थिक अधिकारों से वंचित नारी की नियति ही परवश होना था। गुप्त जी कहते हैं —

'अबलाजीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी"

'यशोधरा' और 'साकेत' में उन्होंने इसे ऊँचा स्थान दिलाने का प्रयत्न किया है।

समाज में फूट की स्थिति बनती है अज्ञानता के कारण। अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, परंपरागत मान्यताएँ इस अज्ञानता में वृद्धि करती हैं। गुप्त जी अविवेक का विरोध करते हैं —

"रखतो परस्पर मेल मन से छोड़कर अविवेकता
मन का मिलन ही मिलन है होती उससे एकता।"

गुलामी का सबसे बड़ा कारण है 'विभेद'। हमारा समाज तो शुरू से ही जाति-उपजाति में बँटा है। साम्प्रदायिक और आर्थिक विभेद के कारण वह और भी जर्जर हुआ। इस काल के कवियों ने इस पर जोरदार प्रहार किया। देवी प्रसाद पूर्ण कहते हैं:

जरा फूट की दशा खोलकर आँखें देखो
खुदगर्जी का नशा खोलकर आँखें देखो

नवजागरण परक चेतना भक्ति या धार्मिकता को भी मानवीय सरोकारों के साथ अपनाती है। कवियों ने ईश्वर को उनके में भी लोकमंगल की चेतना को प्रमुख रखा है। 'प्रिय प्रवास' के राधा और कृष्ण भी मनुष्य रूप में ही सामने आते हैं ईश्वर रूप में नहीं।

महावीर प्र. द्विवेदी ने कविता को मूल्यपरक बनाने पर जोर दिया। साहित्य की सोद्देश्यता निर्धारित की। सामाजिक मानवीय सरोकारों को लेकर आने वाला साहित्य लोकहित से संपन्न होता है। इस युग के रचनाकारों ने पौराणिक आख्यानों के माध्यम से नैतिकता को प्रश्रय दिया। साहित्य का प्रयोजन मात्र मनोरंजन न रहकर व्यक्ति समाज-शिक्षा से भी जुड़ गया। काव्य के माध्यम से न्याय को प्रतिस्थापित करने की चेष्टा की गई, कर्म की राह पर चलने की प्रेरणा देकर लोगों को विकास की राह दिखाई गई। द्विवेदी जी के प्रयत्न से हर वस्तु काव्य के विषय के अंतर्गत आने लगी। इससे काव्य का विषय व्यापक हुआ और जीवन दृष्टि उदार हुई।

द्विवेदीयुगीन आधुनिकता यथार्थचेतना लेकर आती है। पौराणिक अतिप्राकृतिक घटनाओं को यहां तथा विश्वसनीय रूप दिया गया।

जहां तक प्रकृतिचित्रण की बात है वह यहां स्वतन्त्र रूप को प्राप्त करती है। यहां वह प्रस्तुत भी विषय है और अप्रस्तुत भी। वह उद्दीपन भी है और आलंबन भी। उसका रूप चित्रण भी हुआ है और भाव चित्रण भी। इस युग के स्वच्छंदतावादी कवियों ने प्रकृति को मुक्त करने में अहम भूमिका निभाई। रामनरेश त्रिपाठी के तीनों खंड काव्यों में प्रकृति अपने लकड़ालानी रूप में उपस्थित है।

द्विवेदीयुगीन कविता विवरणात्मक है। उपदेशात्मकता के दबाव में भी यह इतिवृत्तात्मक बन गई है। हिन्दी कविता अभी घुटनों के बल ही चल रही थी। द्विवेदी जी सरल भाषा के कवि को ही बड़ा मानते थे क्योंकि उनको अधिक से अधिक पाठक पढ़ सकता था। उनकी दृष्टि में साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच कर ही अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकता है। अतः इस युग के कवि काव्य प्रतिभा की दृष्टि से बहुत समृद्ध नहीं भी थे तो उनके अनथक प्रयास ने आधुनिक हिंदी कविता को एक नई भूमि और ऊंचाई प्रदान किया।